आरती रविवार की

कहं लगि आरती दास करेंगे,
सकल जगत जाकी जोति विरोज ।
सात समुद्र जाके चरणनि बसे,
कहा भयो जल कुम्भ भरे हो राम ।
कोटि भानु जाके नख की शोभा,
कहा भयो मंदिर दीप धरे हो राम ।
भार अठारह रोमावलि जाके,
कहा भयो शिर पुष्प धरे हो राम ।
छप्पन भोग जाके प्रतिदिन लागें,
कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम ।
अमित कोटि जाके बाजा बाजें,
कहा भयो झनकार करे हो राम ।
चार वेद जाके मुख की शोभा,
कहा भयो ब्रह्म वेद पढ़े हो राम ।
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक,
नारद मुनि जो ध्यान धरे हो राम ।
हिम मंदार जाको पवन झकोरें,
कहा भयो शिर चंवर ढुरे हो राम ।
लख चौरासी बंद छुड़ाये ।।

विवरण

जिनकी ज्योति से सारा संसार प्रकाशमय हुआ रहता है, ऐसे भगवान की आरती हम सब आपके दास कैसे करें । सातों समुद्र जिनके चरणों के नीचे रहता है, ऐसे प्रभु को कुम्भ का जल भर कर किस तरह चढ़ायें । जिनके नख की शोभा सूर्य की ज्योति के समान है, ऐसे प्रभु के मन्दिर में हम दीपक कैसे जलाएँ ।

जिनके प्रेम से हमारे रोम-रोम पुलकित हो उठते हैं, ऐसे प्रभु के सिर पर हम फूल कैसे चढ़ायें । प्रतिदिन जिनका छप्पन प्रकार के व्यंजनों से भोग लगता है, ऐसे प्रभु को हम किस तरह नैवेद्य चढ़ाएँ । जिनके यहाँ अनेकों प्रकार के सुन्दर बाज्य यन्त्र बज रहें हैं, ऐसे प्रभु के पास हम अपने पायलों की झंकार कैसे करें। चारों वेद जिनके सुन्दर मुख की शोभा है, ऐसे प्रभु के सामने हम वेदों की स्तुति कैसे करें ।

भगवान शंकर एवं ब्रह्मा, मुनि, देवता आदि जिनके ध्यान में लगे रहते हैं, तथा जिनके स्वर्ण मन्दिर को पवन देवता अपने हवा के झंकार से प्रभावित करते रहते हैं, ऐसे रवि भगवान के सिर पर हमेशा चँवर ढुलता रहता है तथा ये सभी प्रकार के बँधनों से छुटकारा दिलाने वाले हैं ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.